"इस शहर के लोग"

देखने में तो भले हैं इस शहर के लोग,

दिलजले हैं, मनचले हैं, इस शहर के लोग।

जिसमें जितना झूठ, मक्कारी, कपट, छल, दोगलापन,

उतने ही फूले फले हैं, इस शहर के लोग।

तन से दिखते जो भी जितने दूध के धोये धुले,

मन से उतने कोयले हैं, इस शहर के लोग।

सत्य की खुलकर गवाही के समर्थन में खड़े,

गूंगे, हकले, तोतले हैं, इस शहर के लोग।

शून्य नैतिक मूल्य, पर बाज़ार में चलते हुए,

नकली सिक्कों से ढले हैं, इस शहर के लोग।

आस्तीनों में छुपे खंजर, लिए लब पर हसीं,

दूर रहना दोगले हैं, इस शहर के लोग।

खून पीकर हड्डियाँ साबित चबा जाते हैं,

दूध पर मां के पले जो, इस शहर के लोग।

अब कहाँ जाएँ? रहें कैसे? करें क्या?

सारी दुनियां की फिजाओं में घुले हैं, इस शहर के लोग।

© www.priyankdubey.com